🧾 सत्रीय कार्य (Sessional Work)

विषय: आंकलन युक्ति के रूप में परियोजना, सेमिनार एवं रिपोर्ट का उपयोग

पाठ्यक्रम: बी.एड / डी.एल.एड

विषय कोड: शिक्षा मापन एवं मूल्यांकन

छात्र का नाम: ___________

प्रशिक्षक का नाम: ___________

संस्थान का नाम: ___________

🏫 भूमिका (Introduction)

शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यांकन (Assessment) का अर्थ केवल अंक देना नहीं होता, बल्कि विद्यार्थियों के **ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण, व्यवहार, रचनात्मकता और व्यक्तित्व विकास** का समग्र आकलन करना होता है।

आज की **नई शिक्षा नीति (NEP 2020)** और **निरंतर एवं समग्र मूल्यांकन (CCE)** प्रणाली में पारंपरिक परीक्षा पद्धति के स्थान पर विभिन्न **आंकलन युक्तियों (Assessment Techniques)** का प्रयोग किया जा रहा है।

इनमें प्रमुख हैं —

1. **परियोजना कार्य (Project Work)**
2. **सेमिनार (Seminar)**
3. **रिपोर्ट लेखन (Report Writing)**

ये तीनों विधियाँ विद्यार्थियों को न केवल विषय को गहराई से समझने में मदद करती हैं, बल्कि उनमें अनुसंधान, विश्लेषण, प्रस्तुतीकरण और संचार कौशल भी विकसित करती हैं।

🎯 आंकलन युक्ति का अर्थ (Meaning of Assessment Technique)

आंकलन युक्ति वे उपकरण या विधियाँ हैं जिनकी सहायता से शिक्षक विद्यार्थी की सीखने की प्रक्रिया, उपलब्धियों और व्यक्तित्व का मूल्यांकन करता है।
इन युक्तियों से शिक्षक यह जान सकता है कि विद्यार्थी ने क्या सीखा, कैसे सीखा और उसका व्यवहारिक उपयोग कितना कर पा रहा है।

📘 1. परियोजना कार्य (Project Work)

🔹 अर्थ (Meaning)

परियोजना एक ऐसी शिक्षण गतिविधि है जिसमें विद्यार्थी किसी **समस्या या विषय पर व्यावहारिक अध्ययन (Practical Study)** करते हैं और उसके समाधान हेतु एक रिपोर्ट या मॉडल तैयार करते हैं।

परिभाषा:
किलपैट्रिक के अनुसार —

> "A project is a wholehearted purposeful activity proceeding in a social environment."
> अर्थात्, परियोजना एक सामाजिक परिवेश में की जाने वाली उद्देश्यपूर्ण गतिविधि है।

🔹 परियोजना कार्य के उद्देश्य (Objectives)

1. विद्यार्थियों में शोध एवं खोज की प्रवृत्ति विकसित करना।

2. सीखने को वास्तविक जीवन स्थितियों से जोड़ना।

3. सहयोग, योजना और समस्या समाधान की क्षमता बढ़ाना।

4. विद्यार्थियों में जिम्मेदारी और आत्मनिर्भरता विकसित करना।

🔹 **मूल्यांकन में उपयोग (Use in Assessment)**

- शिक्षक परियोजना के चयन, योजना, निष्पादन और प्रस्तुति सभी चरणों में विद्यार्थियों का अवलोकन करता है।
- यह मूल्यांकन विद्यार्थियों की **रचनात्मकता, विश्लेषण क्षमता और व्यवहारिक ज्ञान** को प्रकट करता है।
- इसके माध्यम से **"करके सीखना (Learning by Doing)"** का सिद्धांत साकार होता है।

🗣️ 2. सेमिनार (Seminar)

🔹 **अर्थ (Meaning)**

सेमिनार एक ऐसी शैक्षणिक प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थी किसी विषय पर शोध करके अपने निष्कर्ष समूह के समक्ष प्रस्तुत करता है और उस पर चर्चा होती है।

सरल शब्दों में:

"सेमिनार एक शैक्षणिक सम्मेलन है जिसमें विद्यार्थी किसी विषय पर विचार, विश्लेषण और चर्चा करते हैं।"

🔹 **सेमिनार के उद्देश्य (Objectives)**

1. विद्यार्थियों में अभिव्यक्ति एवं संचार कौशल विकसित करना।
2. तर्कसंगत विचार और आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करना।
3. आत्मविश्वास एवं प्रस्तुतीकरण क्षमता बढ़ाना।
4. विषय की गहन समझ विकसित करना।

🔹 **मूल्यांकन में उपयोग (Use in Assessment)**

- सेमिनार के दौरान विद्यार्थियों का **विषय ज्ञान, बोलने की शैली, तर्क क्षमता, प्रस्तुतीकरण और सहभागिता** के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है।
- शिक्षक "सहयोगात्मक अधिगम" (Collaborative Learning) का भी अवलोकन कर सकता है।
- इससे विद्यार्थियों की **समझ और व्यावहारिक प्रदर्शन** का यथार्थ मूल्यांकन संभव होता है।

🧾 3. रिपोर्ट लेखन (Report Writing)

🔹 **अर्थ (Meaning)**

रिपोर्ट किसी घटना, गतिविधि, प्रयोग या सर्वेक्षण का तथ्यात्मक विवरण होती है।
यह विद्यार्थियों की अवलोकन शक्ति, विश्लेषण कौशल और लेखन क्षमता का प्रमाण होती है।

सरल शब्दों में:

> "रिपोर्ट लेखन किसी कार्य या अध्ययन के परिणामों का व्यवस्थित और सटीक प्रस्तुतीकरण है।"

🔹 **रिपोर्ट लेखन के उद्देश्य (Objectives)**

1. विद्यार्थियों में लेखन कौशल एवं विश्लेषण शक्ति विकसित करना।
2. अध्ययन या सर्वेक्षण के परिणामों को सुसंगठित रूप में प्रस्तुत करना।
3. वास्तविक अनुभवों को अभिलेख के रूप में संजोना।
4. साक्ष्य-आधारित अधिगम को बढ़ावा देना।

🔹 **मूल्यांकन में उपयोग (Use in Assessment)**

- रिपोर्ट के माध्यम से शिक्षक विद्यार्थियों की **अवलोकन क्षमता, तार्किक सोच और अभिव्यक्ति शैली** का आकलन करता है।
- रिपोर्ट में प्रस्तुत डेटा की सत्यता, निष्कर्ष और प्रस्तुति के आधार पर अंक दिए जाते हैं।

📊 तीनों युक्तियों का तुलनात्मक सारणी (Comparative Table)

क्रमांक	युक्ति	मुख्य उद्देश्य	मूल्यांकन का आधार
1	परियोजना	व्यवहारिक अध्ययन एवं समस्या समाधान	योजना, निष्पादन, प्रस्तुति
2	सेमिनार	मौखिक प्रस्तुति एवं तर्कशीलता	विषय ज्ञान, बोलने की क्षमता, सहभागिता
3	रिपोर्ट लेखन	लेखन एवं विश्लेषण कौशल	डेटा प्रस्तुति, भाषा, निष्कर्ष

🌟 इन युक्तियों के लाभ (Advantages)

1. विद्यार्थियों का समग्र विकास होता है।

2. रचनात्मक और व्यावहारिक अधिगम को बढ़ावा मिलता है।

3. आत्मविश्वास और सहयोग भावना का विकास होता है।

4. शिक्षक विद्यार्थियों की वास्तविक क्षमताओं को पहचान पाता है।

5. पारंपरिक परीक्षा प्रणाली का एक प्रभावी विकल्प प्रस्तुत करती हैं।

⚠️ सीमाएँ (Limitations)

1. समय और संसाधनों की अधिक आवश्यकता।

2. मूल्यांकन की एकरूपता बनाए रखना कठिन।

3. कुछ विद्यार्थी सक्रिय नहीं हो पाते।

4. शिक्षक को अतिरिक्त तैयारी और पर्यवेक्षण करना पड़ता है।

🏁 निष्कर्ष (Conclusion)

परियोजना, सेमिनार एवं रिपोर्ट — ये तीनों **आधुनिक आंकलन युक्तियाँ** विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन में अत्यंत उपयोगी हैं।
ये विधियाँ विद्यार्थियों को केवल जानकारी प्राप्त करने तक सीमित नहीं रखतीं, बल्कि उन्हें **सोचने, विश्लेषण करने, अभिव्यक्त करने और प्रस्तुत करने** के लिए प्रेरित करती हैं।

इस प्रकार ये न केवल सीखने को अधिक अर्थपूर्ण बनाती हैं बल्कि शिक्षण प्रक्रिया को भी सशक्त बनाती हैं।

📚 संदर्भ (References)

1. एनसीईआरटी – *शिक्षा मापन एवं मूल्यांकन*
2. एनसीएफ 2005 – *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा*
3. एस.के. मंगल – *शैक्षिक मनोविज्ञान*
4. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय – *बी.एड अध्ययन सामग्री*

🔗 **हमसे जुड़ें:**

👉 **Telegram Channel:** [RLK Classes]

🌐 **Website:** www.rlkclasses.in

🧾 सत्रीय कार्य (Sessional Work)

विषय: आंकलन की सीमाएँ

पाठ्यक्रम: बी.एड / डी.एल.एड

विषय क्षेत्र: शिक्षा मापन एवं मूल्यांकन

छात्र का नाम: ____________

शिक्षक का नाम: ____________

संस्थान का नाम: ____________

🏫 भूमिका (Introduction)

शिक्षा के क्षेत्र में **मूल्यांकन (Evaluation)** का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को अंक देना नहीं है, बल्कि उनके **ज्ञान, कौशल, व्यवहार, दृष्टिकोण और समग्र व्यक्तित्व** का आकलन करना है।

मूल्यांकन शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है, जो यह बताता है कि शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई है।

परंतु, जहाँ मूल्यांकन के अनेक लाभ हैं, वहीं इसकी कुछ **सीमाएँ (Limitations)** भी हैं, जिनके कारण यह हमेशा संपूर्ण या निष्पक्ष परिणाम प्रदान नहीं कर पाता।

📘 आंकलन का अर्थ (Meaning of Evaluation)

"Evaluation" का अर्थ है किसी व्यक्ति, प्रक्रिया या वस्तु के **मूल्य या महत्व का निर्धारण करना**।

शिक्षा में मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिससे शिक्षक यह जानता है कि विद्यार्थी ने क्या सीखा है और वह अपने ज्ञान को व्यवहार में कितना ला पा रहा है।

टायलर (Tyler) के अनुसार –

"Evaluation is the process of determining to what extent educational objectives are being realized."

अर्थात् – मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिससे शिक्षण उद्देश्यों की पूर्ति की सीमा का निर्धारण किया जाता है।

🎯 आंकलन का उद्देश्य (Objectives of Evaluation)

1. विद्यार्थियों की प्रगति का निर्धारण करना।
2. शिक्षण की प्रभावशीलता को मापना।
3. विद्यार्थियों की क्षमताओं और कमियों की पहचान करना।
4. सुधारात्मक शिक्षण (Remedial Teaching) के लिए दिशा प्रदान करना।
5. शिक्षण प्रक्रिया में निरंतर सुधार करना।

⚙️ आंकलन की सीमाएँ (Limitations of Evaluation)

मूल्यांकन प्रक्रिया के दौरान कई व्यावहारिक, मानवीय और तकनीकी सीमाएँ सामने आती हैं।

नीचे प्रमुख सीमाएँ दी गई हैं 👇

🔹 1. मानवीय पक्षपात (Human Bias)

मूल्यांकनकर्ता (शिक्षक) के व्यक्तिगत दृष्टिकोण, अनुभव या भावनाएँ परिणामों को प्रभावित कर सकती हैं।
उदाहरण के लिए, किसी विद्यार्थी के प्रति झुकाव या पूर्वाग्रह के कारण अंक वास्तविक क्षमता से अधिक या कम दिए जा सकते हैं।

🔹 2. सीमित परीक्षण साधन (Limited Testing Tools)

अधिकांश मूल्यांकन केवल लिखित परीक्षाओं पर आधारित होते हैं,
जबकि विद्यार्थियों की अन्य क्षमताएँ — जैसे रचनात्मकता, नेतृत्व, व्यवहार, सहयोग — अक्सर अनदेखी रह जाती हैं।

🔹 3. व्यक्तित्व के सम्पूर्ण मूल्यांकन की कठिनाई (Difficulty in Assessing Total Personality)

मूल्यांकन के द्वारा विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व (जैसे नैतिक मूल्य, दृष्टिकोण, भावनात्मक परिपक्वता) को मापना लगभग असंभव होता है।
इसलिए मूल्यांकन केवल ज्ञान या बौद्धिक स्तर तक सीमित रह जाता है।

🔹 4. मूल्यांकन की एकरूपता की कमी (Lack of Uniformity)

हर शिक्षक का मूल्यांकन करने का तरीका भिन्न होता है।
कभी वही उत्तर अलग-अलग शिक्षकों द्वारा अलग-अलग अंक पा सकता है।
इससे मूल्यांकन की निष्पक्षता (Objectivity) प्रभावित होती है।

🔹 5. समय की अधिकता (Time Consuming Process)

समग्र मूल्यांकन (Comprehensive Evaluation) के लिए प्रत्येक विद्यार्थी के व्यवहार, प्रदर्शन और कौशल का अध्ययन करना बहुत समय लेता है,
जिससे व्यावहारिक रूप में यह सभी छात्रों के लिए संभव नहीं हो पाता।

- 6. भावनात्मक और सामाजिक पक्षों की उपेक्षा (Neglect of Emotional and Social Aspects)

अधिकांश मूल्यांकन केवल बौद्धिक क्षमताओं पर केंद्रित होते हैं।
विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence), सामाजिक व्यवहार या नैतिक मूल्यों का मापन नहीं किया जाता।

- 7. बाह्य परिस्थितियों का प्रभाव (Influence of External Factors)

परीक्षा के समय विद्यार्थियों का स्वास्थ्य, मानसिक स्थिति या पारिवारिक परिस्थिति उनके प्रदर्शन को प्रभावित कर सकती है,
परंतु मूल्यांकन में इन कारकों को ध्यान में नहीं रखा जाता।

- 8. परिणामों का सीमित प्रयोग (Limited Use of Results)

कई बार मूल्यांकन के परिणाम केवल अंक पत्र तक सीमित रह जाते हैं।
इनका प्रयोग विद्यार्थियों की सुधारात्मक शिक्षण या मार्गदर्शन में नहीं किया जाता।

- 9. तकनीकी ज्ञान का अभाव (Lack of Technical Knowledge)

कई शिक्षकों को परीक्षण निर्माण, ब्लूप्रिंट तैयार करने या मूल्यांकन तकनीकों की पर्याप्त जानकारी नहीं होती।
इस कारण मूल्यांकन प्रक्रिया वैज्ञानिक रूप से सटीक नहीं रह पाती।

🔹 10. विद्यार्थियों में परीक्षा का भय (Exam Anxiety)

पारंपरिक मूल्यांकन प्रणाली में विद्यार्थियों को परीक्षा के समय भय, तनाव और दबाव का सामना करना पड़ता है,
जिससे उनका वास्तविक प्रदर्शन सामने नहीं आ पाता।

📊 संक्षेप में आंकलन की प्रमुख सीमाएँ सारणी के रूप में —

क्रमांक	सीमाएँ	विवरण
1	मानवीय पक्षपात	शिक्षक की व्यक्तिगत धारणा परिणामों को प्रभावित कर सकती है
2	सीमित परीक्षण साधन	केवल लिखित परीक्षा पर निर्भरता
3	सम्पूर्ण व्यक्तित्व का आकलन कठिन	नैतिक, सामाजिक व भावनात्मक पक्ष उपेक्षित
4	एकरूपता का अभाव	सभी शिक्षकों की अंक देने की नीति अलग
5	समय की अधिकता	प्रत्येक छात्र का व्यक्तिगत मूल्यांकन कठिन

6	बाह्य प्रभाव	स्वास्थ्य, मनोदशा आदि कारक असर डालते हैं

🏁 निष्कर्ष (Conclusion)

मूल्यांकन शिक्षा की आत्मा है, किंतु इसकी प्रभावशीलता तभी सुनिश्चित की जा सकती है जब इसे **निष्पक्ष, वैज्ञानिक, निरंतर और समग्र दृष्टिकोण** से किया जाए।
इन सीमाओं को कम करने के लिए **सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE), आत्ममूल्यांकन (Self Evaluation)** और **सहकर्मी मूल्यांकन (Peer Assessment)** जैसी विधियों को अपनाया जा सकता है।

यदि मूल्यांकन केवल अंक देने का माध्यम न रहकर, विद्यार्थियों के समग्र विकास का साधन बने,
तभी शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य पूरा होगा।

📚 संदर्भ (References)

1. एनसीईआरटी – *शिक्षा मापन एवं मूल्यांकन*
2. एनसीएफ 2005 – *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा*
3. डॉ. एस.के. मंगल – *शैक्षिक मनोविज्ञान*
4. डॉ. वी.के. शर्मा – *Evaluation in Education*

🔗 **हमसे जुड़ें:**

👉 **Telegram Channel:** RLK Classes

🌐 **Website:** www.rlkclasses.in